आई.एस.एस.एन. संख्या : 2454–2458
नवरचना NAVRACHNA
www.grefiglobal.org/journals/navrachna2016
वर्ष 2, अंक 1–2, 2016, पृ. 61–63

पुस्तक समीक्षा

माजी, महुआ 2010रू मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ, नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन, पृ. 402 मूल्य रु. 495।

महुआ माजी द्वारा लिखित उपन्यास 'मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ, आदिवासियों के सरल जंगल–जीवन पर लिखा अत्यन्त मार्मिक, संवेदनशील व शोधपरक उपन्यास है। लेखिका ने आदिवासियों की जंगल–जीवन में अंतरंगता और आदिवासी इलाकों में रेडियोएक्टिव पदार्थ यूरेनियम के खनन से होने वाले प्रदूषण, विस्थापन, विकिरण तथा उसके परिणामस्वरूप होने वाली शारीरिक व सामाजिक समस्याओं की सूक्ष्म तथा गहन विवरणों के साथ व्याख्या की है। लेखिका ने कथा के विकास के लिए बड़ा शोध किया है, घटनाओं की व्याख्या के लिए समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य का प्रयोग भी किया है। एक ओर लेखिका का आदिवासी जीवन के प्रति गहन तथा सूक्ष्म अध्ययन, तथ्यों की जानकारी का अपार संग्रह है, दूसरी ओर संसार के विभिन्न द्वीपों में रहने वाले आदिवासियों पर यूरेनियम जैसे पदार्थ के रेडिएशन तथा विकिरण से होने वाले गम्भीर प्रभाव एवं परिणामों का विश्लेषण है। इसे नियंत्रित करने में एन0जी0ओ0, डाक्यूमेंट्री फिल्म्स तथा गांवों में छोटे–छोटे समूहों में जागरूकता अभियान के माध्यम से लेखिका ने वैश्विक स्तर पर इसे एक गम्भीर चिन्तनीय विषय के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया है।

लेखिका की कल्पना में 'मरंग गोड़ा' झारखण्ड–जमशेदपुर से 25–30 किमी0 दूर एशिया का सबसे घना – 'साल' का जंगल, मगर लौह अयस्क खदानों की वजह से क्रमशः प्रदूषित होता 'सारंडा' सात सौ पहाड़ियों के घने जंगल में बसा 'हो' व 'संताली' आदिवासियों का गांव है। तीन पीढ़ियों, जाम्बीरा–रेकाण्डा–सगेन से गुजरते हुए उपन्यास में आदिवासीय प्राकृतिक जीवन का सरसतापूर्ण वर्णन किया गया है। आदिवासियों का प्रकृति के प्रति अगाध प्रेम, देवता माने जाने वाले 'साल' के मजबूत वृक्षों से पाने वाली सुरक्षा का अहसास, महुआ के फूलों की महक और जंगली जानवरों पक्षियों तथा जंगल का विविधतापूर्ण स्वभाव समझने की अकूत परख का वर्णन रोचकता लिये हुए हैं।

आदिवासियों की जंगल से अन्तरंगता, विश्वास रीति–रिवाज तथा भाषा का सूक्ष्म विवरण करने में लेखिका की समझ तथा ज्ञान की अभिव्यक्ति विस्मित कर देने वाली है। लेखिका ने कथा को अधिक जीवंत बनाते हुये लोक भाषा के शब्दों का प्रयोग किया है जैसेः जियंग–दादी; ततंग–दादा; डियंग–शराब; जोआर–नमस्ते; दैनिक जीवन का रहन– सहन लाल चींटो वाली लहसुन मिर्चे की स्वादिष्ट चटनी। संस्कृति – देवता–सिंगबोंगा जो अपनी जांघ के मैल से केंचुयें बना देते हैं। रीति रिवाज – मृत्यु का संस्कार हिन्दू सामाजिक व्यवस्था जैसी ही तेरहवीं की व्यवस्था का इतना

विविधता पूर्ण वर्णन है जिसमें आदिवासियों के जीवन का हर पक्ष सम्मिलित है। जंगल की समझ तथा जंगल के आदमखोर शेर का स्वभाव और उसका अपने शिकार की तलाश करने के तरीकों को बड़ी कुशलता से व्याख्यायित किया है।

दूसरी ओर कथानक आदिवासीय जीवन से जुड़ी छोटी–छोटी घटनाओं व रोमांचक किस्सों को समेटते हुए 'मरंग गोड़ा' में 'बाहरी लोगों' के आने वहां के प्राकृतिक संसाधनों की खोज और उसके मनमाने प्रयोग करने की ओर अग्रसरित होता है। कथा का मुख्य पात्र सगेन का ततंग (दादा) जाम्बीरा, जो जियोलॉजिस्ट को 'पत्थरों का डॉक्टर' समझता है, जो पत्थरों की जांच करते हैं और उसमें से उपयोगी व मूल्यवान पत्थरों को खोज निकालते हैं, जाम्बीरा जैसे सरल आदिवासी जो बाहरी लोगों के स्वार्थ तथा इसके खतरनाक परिणामें से अनभिज्ञ हैं वे नहीं जानते कि यही पत्थरों की खोज 'मरंग गोड़ा' को खदानों का इलाका बना देगी, जिसमें लौह खदानों से लेकर यूरेनियम की खदानें शामिल है, जिससे प्रदूषण, विस्थापन तथा विकिरण के खतरे व्यापक स्तर पर बढ़ते हैं। जाम्बीरा इन पत्थरों की खुदाई को विकास का मानदण्ड मानकर अपने आदिवासी समूह व आने वाली पीढ़ी के लिए उन्नति का मार्ग समझता है, उसमें बाहरी लोगों के साथ मिलकर काम करने की उम्मीद में उन पर विश्वास कायम करता है। आदिवासियों से सहोदरों का रिश्ता रखने वाला जंगल टूटे पत्थरों और उससे उठने वाली खतरनाक रासायनिक धूल से भरकर बीमार हो गया, खदानों से निकलने वाला कीमती पदार्थ यूरेनियम अपने साथ बहुत सा रासायनिक कचरा ले आया, जिसे सहेजना तथा मासूम लोगों को उससे होने वाली गंभीर क्षति से बचाने की तरफ किसी का भी ध्यान नहीं गया। प्रदूषण व विकिरण जहर की तरह आदिवासियों के घरों, छतों, बच्चों के क्रीड़ास्थल, खदान के मजदूरों के जूतों कपड़ों पे लदी रासायनिक धूल, भोजन, पानी, नदी, तालाबों की तह तक फैल गया।

खदानों से प्रदूषण, विकिरण विस्थापन और आदिवासियों की समस्याओं का अर्न्तसम्बन्ध धीरे–धीरे परिवर्तन का एक भयंकर रूप सामने ले आया, आदिवासियों की छटपटाहट बढ़ने लगी, उन्हें महसूस हुआ कि उनके साथ छल–कपट जैसा कुछ हो रहा है पर जब तक वे इसे समझ पाते आदिवासियों का प्राकृतिक जीवन गंभीर, जेनेटिक बीमारियों एवं शारीरिक समस्याओं से घिर गया था। लोगों की परेशानियां, असंतुष्टियां, बाहरी लोगों से शोषण और असुरक्षा उन्हें उद्वेलित कर रही थीं, अपने पूर्वज 'हो' योद्धाओं की वीरता को याद कर वे भी एकजुट होने लगे और आन्दोलन को तैयार हुये। सगेन जो नगरीय संस्कृति से जुड़कर शिक्षित होकर वापस आदिवासियों के बीच पहुंचा और एन0जी0ओ0 तथा फिल्मकार आदित्य श्री के साथ मिलकर इस आन्दोलन की पृष्ठभूमि तैयार की। आन्दोलन के माध्यम से लेखिका ने यूरेनियम तथा उसके रासायनिक अवशेष में रेडियम, थोरियम, रेडॉन गैस तथा अल्फा, बीटा गामा किरणों से होने वाले गंभीर परिणामों की विस्तृत व्याख्या की है जो ज्ञानवर्धक है– ''यूरेनियम प्रकृति में पाई जाने वाली सबसे भारी धातु तो है ही प्राकृतिक यूरेनियम का अर्धजीवन ही करीब साढ़े चार खरब (बिलियन) वर्ष है। यह एक ऐसा रेडियोधर्मी तत्व भी है जो धीरे–धीरे ऊर्जा की किरणों को बिखेरते हुये नष्ट होता जाता है ..... रेडियोधर्मी क्षयन के दौरान दो तरह के विद्युतीय कण निकलते हैं – अल्फा तथा बीटा कण। इसके अतिरिक्त शक्तिशाली गामा किरणें भी उत्पन्न होती हैं, अल्फा, बीटा तथा गामा किरणें हमारे शरीर की जिन्दा कोशिकाओं में प्रवेश करके उसमें जेनेटिक विघ्न पैदा करती हैं। विश्व के अन्य देशों के साथ ही लेखिका भारत तथा पाकिस्तान के परमाणु संयत्रों की होड़ के नकारात्मक पक्षों

को रखते हुए आदित्य श्री से कहलाती है– ''परमाणु संयंत्रों में एक हजार मेगावाट बिजली पैदा करने से करीब 27 किलोग्राम रेडियोधर्मी कचरा उत्पन्न होता है और उसे निष्क्रिय होने में एक लाख साल से ज्यादा लग जाते हैं''। ये सूचनायें कथा को विस्तार और अर्थ देने के लिये हैं, कई बार यह विस्तार अनावश्यक सा हो जाता है तथा कथा की रोचकता को कम करने लगता है पर यह अनावश्यक सा लगने वाला विस्तार ही है जो शोधपरक सूचनायें इकट्ठी कर देता है यह उपन्यास के केन्द्रीय बिन्दु को व्यापक अर्थ देकर विनाश के उपकरणों के यथार्थ का खुलासा भी कर जाता है। लेखिका ने मरंग गोड़ा के आदिवासियों के साथ ही साथ सम्पूर्ण विश्व के आदिवासियों के साथ हुई ऐसी अमानवीयता का उल्लेख किया है – ''..... अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रान्स द्वारा किये जाने वाले न्यूक्लियर टेस्ट से होने वाला रेडिएशन, आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैण्ड के निकट प्रशांत महासागर के छोटे–छोटे द्वीपों में रहने वाले आदिवासियों की रेडिऐशन से सुरक्षा आदि के प्रयास अमेरिका के 'नवाहों' आदिवासियों की सृष्टिकथा में भी है कि ''यूरेनियम को धरती के अन्दर ही छोड़ दिया जाना चाहिये। इसे जमीन से बाहर निकालने पर यह सांप बन जायेगा। जिससे अपमृत्यु व विनाश होगा।''

असल में सम्पूर्ण विश्व के आदिवासियों को तथाकथित सभ्य समाज ने विकास के अपने मापदण्डों की पूर्ति के लिये उसे पतन की ओर धकेल दिया है। प्रकृति के निकट के जीवन की अपनी विषेशतायें हैं, अपनी स्वच्छंदता है, विकास तथा सत्ता के लिये वह जीवन महत्वहीन है लेकिन उन जंगलों के नीचे की सम्पत्ति तथा समृद्धि को पाने के लिये इस समाज ने पृथ्वी का तथा आदिवासियों का दोहन किया।

लेखिका ने कथानक में घटनाओं की व्याख्या के लिये समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणों व शब्दावलियों का प्रयोग भी किया है जैसे– मरंग गोड़ा के शोध अध्ययन में प्रज्ञा आदित्य श्री के साथ मिलकर अध्ययन करने का आग्रह कर रही है जिसे How Thrown Exp. के संदर्भ देते हुये कहती है– ''आजकल विकसित देशों में सहकर्मियों के बीच के अंतरंग सम्बन्धों को अच्छी नज़र से देखा जाता है। लोग यह मानकर चलते हैं कि इससे काम अच्छा होता है।''

लेखिका की समाजशास्त्रीय दृष्टि कथानक को उसकी जटिलताओं व विस्तृताओं में पेश करती है। कथानक में एक गम्भीर वैश्विक चिन्ता को मानवीय सम्बन्धों तथा अंर्तक्रियाओं के मध्य पिरोकर रोचक बनाने का प्रयास किया गया है। आदिवासियों पर रेडियो एक्टिविटी के परिणामों की व्याख्या तथा यूरोपीय देशों की समग्रता में परमाणु प्रयोग प्रभाव तथा परिणाम का जो विस्तार दिया है वह भारतीय आदिवासियों को वैश्विक आयाम देता है, एक तरीके से उनकी समस्याओं के सामान्यीकरण करने का प्रयास है। हालाँकि कहीं–कहीं सूचनाओं का अर्थयुक्त विस्तार कथा की रोचकता को कम करने लगता है। इस कारण वर्णन उबाऊ होने के नजदीक पहुँच जाता है लेकिन उपन्यास अधिकतर जिज्ञासा व रूचि को बनाये रखता है।

डा0 रचना रंजन
समाजशास्त्र विभाग,
बाबा भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ